बेटों से प्यार, बेटियों का तिरस्कार

सुजाता की शादी उसके माता-पिता ने बीस साल की छोटी उम्र में कर दी। वह अपनी ग्रेजुएशन भी पूरी नहीं कर पाई थी कि उसकी शादी कर दी गई। सुजाता से छोटी दो बहनें और एक भाई भी था। सुजाता के पिता कपड़े की एक दुकान पर मुनीम थें। उनकी तनख्वाह में ही परिवार अपना गुजारा कर रहा था। अब माता-पिता का सारा ध्यान सुजाता से छोटे लड़के वसंत पर था। वसंत पढ़ाई में सामान्य ही था। बाहरवीं क्लास में पढ़ता था। उसे मोटी फीस वाले इंग्लिश मीडियम स्कूल में उन्होंने दाखिल करवाया था। सोच रहे थे कि वह डॉक्टर बनेगा, तो बहुत कुछ कमा लेगा। जीवन में सुख ही सुख होगा। बेटियाँ क्या ख़ाक देंगी। बेटियों की पढ़ाई पर सुजाता के माता-पिता ने कुछ ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

बारहवीं कक्षा में ही वसंत फेल हो गया। घरवालों को यह आभास हो गया कि वसंत डॉक्टर नहीं बन पाएगा। पिता ने अपनी सारी जमा पूंजी ख़र्च करके वसंत के लिए एक रेडिमेड कपड़ों की दुकान खुलवा दी। बेटा था भई! वह बेटियों की तरह सर पर बोझ थोड़े ही था। कपड़ों की दुकान अच्छी चलने लगी और इसी घमंड में वंसत ने माँ-बाप की इज्जत करना भी छोड़ दिया। सुजाता की दोनों बहनें अपनी बारहवीं कक्षा में पास होकर एक दुकान पर सेल्स-गर्ल का काम करने लगी थीं और इसी से घर का ख़र्चा भी चला पाती थीं क्योंकि वसंत तो सारे कमाए हुए पैसे शराब और नशें में ही उड़ा देता था। कुछ दिनों बाद सुजाता से छोटी बहन की शादी भी एक अच्छे परिवार में हो जाती है और वह अपने ससुराल चली जाती है।

सुजाता की सबसे छोटी बहन कंचन पढ़ाई में बहुत ही अच्छी थी। वह अपने कमाए हुए पैसे जोड़कर अपनी पढ़ाई करती गई और सी.ए. बन गई। वसंत एक अमीर बाप की बेटी से लव-मैरिज करके अपने माँ-बाप से अलग रहने लगा, क्योंकि उसकी पत्नी उसके माँ-बाप के साथ नहीं रहना चाहती थी। अब घर में केवल सुजाता की सबसे छोटी वाली बहन कंचन ही रह गई थी। उसी की कमाई से घर अच्छी तरह से चल रहा था, लेकिन अब उसके माँ-बाप को यह चिंता सता रही थी कि जब कंचन की भी शादी हो जाएगी तो यह घर कैसे चलेगा? वह कहाँ रहेंगे? उनका क्या होगा? अब माता-पिता पछतावे की आग में जल रहे हैं कि बेटे के अलावा बेटियों को कुछ दिया ही नहीं तो अपेक्षा भी क्या करें? इस कहानी का कोई अंत नहीं है। हाँ, इस कहानी से बेटे और बेटियों में फर्क करने वाले माता-पिता शिक्षा जरूर ले सकते हैं।

नेहा
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय।

(टिप्पणी - मैत्रेयी महाविद्यालय की आन्तरिक शिकायत समिति द्वारा आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत लेख।)